

श्रीअवधसरकार और श्रीब्रजसरकार का

मधुर-मिलन

श्रीस्वामीजी श्रीवृन्दावन आये, प्रभु के नाम और भक्ति से परिपूर्ण उनके चरण चिन्हों से अंकित मधुर लीलाओं की स्मृति में मग्न इस पवित्र ब्रजभूमि को देखकर अत्यन्त आनन्दित हुए । यमुना के तट पर सुन्दर-सुन्दर वृक्षपंक्तियों को चूमते हुए नील-कान्त जल हो देखकर श्रीस्वामीजी भावावेष में मग्न हो गये । उनके नेत्रों के सामने श्रीयुगलप्रियतम श्रीसियारामजी का वह लीलाविहार छा गया जो उन्होंने यमुनातट पर किया था उन्होंने देखा कि यमुनातट पर वनवासी श्रीसियारामचन्द्र एवं लक्ष्मण विराजमान हैं । श्री महाराज वृन्दावन की शोभा का वर्णन कर रहे हैं-“प्रिये ! यह देखो, कलिन्दनन्दिनी का कल-कल निनादी प्रवाह ! इसकी प्रखर धारा में सैकड़ों वृक्ष खण्ड-खण्ड होकर बहते हैं । शिखण्डी कूद रहे हैं । वनवासी, तपस्वी मृगेन्द्र-वनिता के स्तन का दुग्ध पान करते हैं । कर्पूरधवल और श्यामल बालुकाओं का पुलिन ! घासों की हरियाली तो ऐसी है मानों मखमली कालीन बिछ रहे हों ! सामने ही वसन्त-सरसी है जिसमें कुमुदनी खिल रही है । लक्ष्मण ! यह कोकिल-कलकण्ठ-कूजित हंसनिनादित श्रीअयोध्या ही श्रीधरणिनन्दिनी को प्रसन्न करने के लिये यहाँ आयी जान पड़ती है । देखो, यह घनी और शीतल छायावाला वृक्ष मधु-स्रावी है । स्वच्छ जल पर छोटी-छोटी तरंगे कितनी मनोहर मालूम पड़ती हैं । रायवेला की भीनी-

भीनी महक बटोहियों को कितना सुख देती हैं । यह है मधुकर-
वधूनिपीत कमलवन ।”

महाराज श्रीरामचन्द्र के मुखारविन्द से सुखद यमुनातट की
महिमा सुनकर श्रीसन्तकोकिलजी के मन में यह भाव उदय हुआ
कि ब्रजविहारी वृन्दावनेश्वर यमुनातट विलासी श्रीश्यामा-
श्यामजू अपने पवित्र प्रदेश में आये हुए हमारे वनवासी सम्राट
श्रीसियाराम का आतिथ्य-सत्कार करने के लिये आ रहे हैं ।
सचमुच गहबर वृक्षावली से दिव्यज्योति छिटकाते हुए, आनन्द
बिखेरते हुए प्रेमोन्मत्त प्रिया प्रियतम शत-शत सखियों के साथ
दही, दूध, माखन, मिश्री, फल-फूल भेंट ले आये और बड़े उल्लास
से श्यामज्योति श्याम से और गौरज्योति गौर से मिलकर
एक हो गयी ।

शिष्टाचार के अनन्तर श्रीरामचन्द्र के वनवासी वेश की
छबि देखते हुए श्रीकृष्णचन्द्र ने कहा - “ अहोभाग्य, अहोभाग्य
सरकार ! आप इसी वन में निवास कीजिये । यह तो आपका
ही है इससे पिताजी की आज्ञा का पालन भी हो जायेगा और
हम सब नाच-गाकर, वंशी बजाकर आपका मनोरंजन करके
सुखपूर्वक अवधि के दिन बितायेंगे । हमारे लिये तो यह बड़े
सुख और सौभाग्य की बात है ।”

महाराज श्रीरामचन्द्रजी ने मुस्कराकर श्रीकृष्णचन्द्र का
आलिंगन किया और बोले - “प्रिय सखे ! हम तुम तो एक ही

हैं । यहाँ रहना तो अयोध्या वास के समान ही है । वनवास कैसे होगा ? यह सब तो लीला मात्र ही है । तुम यहाँ लीला करो, मैं जरा दक्षिण की ओर हो आऊँ । दोनों मुस्कराये और आलिंगन पाश में बँधकर एक हो गये ।

दूसरी ओर श्रीवृषभानुनन्दिनी बड़े प्रेम से, आदर से श्री-भानुकुलभानुकी प्राण प्रिया श्रीकिशोरीजी का स्वागत सत्कार करके बोलीं -“आप के दर्शन से मेरे हृदय में आनन्द की बाढ़ आ गयी है । आप यह कभी न सोचें कि मैं वन में आयी हूँ । हमें सुख और सौभाग्य देने के लिये ही आपने वन में आगमन का बहाना बनाया है । आज का दिन धन्य है, धन्य है । आज उन्मुक्त हृदय से आपसे मिलने का अवसर मिला है । अब आप सब यहीं इसे अपना ही घर समझकर विराजें ।”

प्रेममूर्ति श्रीलाङ्गलीजी श्री मैथिलिचन्द्र को अपनी गोद में बैठाकर बार-बार आलिंगन करने लगीं और अपने अंचल से उनके पथश्रमजन्य स्वेद-बिन्दुओं को पोंछने लगीं और माधुर्य में डूबकर आशीर्वाद संगीत गाने लगीं ।

श्रीमैथिलि तेरे आवन पै बलिजाऊँ ।

जुग जुग जिओ श्रीजानकी जीजी मुरली मधुर सुनाऊँ ॥

जुग जुग जिओ श्रीजानकी अदी । (बहिन)

राज करो रसनिधि राघव से अचल चँवर छत्र गदी ॥

क्रोड़ कालिन्दी सिन्धु सरस्वती तेरे पद में पवित्र विष्णुपदी ।

विष्णु, विधाता, शंकर ने तेरे लाड़ से पदवी लधी ॥ (प्राप्तकी)

उमा रमा शची सावित्री देवी पद कंज सेवा कँदी । (करेगी)

रसभरी राधा आशीष करत है गरीबि श्रीखण्डि तोसँदी ॥ (तुम्हारी है)

यह समाज देखकर श्रीभक्तकोकिलजी आनन्द में मग्न होकर श्रीवृन्दावनेश्वारी एवं श्रीअवधेश्वर-हृदयेश्वरी युगल स्वामिनियों को अपने अन्तर्हृदय से आशीर्वाद देने लगे; क्योंकि गरीबि श्रीखण्डि इन्हीं की चिरसेविका हैं । उनका सम्पूर्ण जीवन और रोम-रोम आशीर्वाद रूप ही है । हे श्रीस्वामिनीजू ! वृन्दावन-निकुञ्जेश्वरी आपको आशीर्वाद देती हुई हमारी सिफारिश कर रही है कि यह गरीबिश्रीखण्डि सदा ब्रजधाम में रहकर चिरकाल तक आपकी सेवा में संलग्न रहे । उसी समय आनन्दकन्द ब्रजचन्द्र श्रीकृष्णचन्द्र सखाओं से उठवाकर भोजन सामग्री वहाँ ले आये । यमुना के तटपर दोनों स्वामी एवं दोनों स्वामिनी साथ-साथ बैठकर आरोगने लगे और दोनों में यमुना जल भर-भर के पीने लगे । सखियाँ सितारपर मधुर मधुर संगीत गाने लगीं । सभी ने मधुर प्रसाद पाया ।